

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

कक्षा - 9

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 6

चिकित्सा का चक्कर

बेढब बनारसी

भाग – 2

कीर्ति बसुमतारी

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

ऐसे-ऐसे लोग आए कि कहाँ तक लिखूँ। हाँ, एक विशेषता थी, जो आता एक-न-एक नुस्खा अपने साथ लेता आता था। किसी ने कहा, अजी कुछ नहीं, हींग पिला दो। किसी ने कहा, चूना खिला दो। खाने के लिए सिवा जूते के और कोई चीज बाकी नहीं रह गई, जिसे लोगों ने न बताई हो। तीन दिन बीत गए, दर्द में कमी न हुई। लोग आते मुझे देखने के लिए, पर चर्चा छिड़ती थी, "प्रसाद जी का अमुक नाटक रंगमंच की दृष्टि से कैसा है? राय कृष्णदास हफ्ते में नौ बार दाढ़ी क्यों बनाते हैं?" मुझे भी कुछ बोलना ही पड़ता था।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

ऊपर से पान और सिगरेट की चपत अलग। भला दर्द में क्या कमी हो।

आखिर में लोगों ने कहा कि तुम कब तक इस तरह पड़े रहोगे, किसी दूसरे की दवा करो। लोगों की सलाह से डाक्टर चूहानाथ कातरजी को बुलाने की सलाह हुई। आप लोग डाक्टर साहब का नाम सुनकर हँसेंगे, पर यह मेरा दोष नहीं है, उनके मा-बाप का दोष है। यदि उनका नाम रखना होता तो अवश्य ही कोई साहित्यिक नाम रखता। वे थे यथा नाम तथा गुण।

आपकी फीस आठ रुपए थी और मोटर का एक रुपया अलग। आप लंदन के एफ. आर.सी.एस. थे।

कुछ लोगों का सौंदर्य रात में बढ़ जाता है, वैसे ही डाक्टरों की फीस रात में बढ़ जाती है। खैर, डाक्टर साहब बुलाए गए। आते ही हमारे हाल पर रहम किया और बोले, "मिनटों में दर्द गायब हुआ जाता है, थोड़ा पानी गरम कराइए, तब तक यह दवा मँगवाइए।" एक पुर्जे पर आपने दवा लिखी, पानी गरम हुआ।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



दो रुपये की दवा आई। डाक्टर बाबू ने तुरंत एक छोटी-सी पिचकारी निकाली, उसमें एक लंबी सूई लगाई, पिचकारी में दवा भरी और मेरे पेट में वह सूई कोंचकर दबा डाली। डाक्टर साहब कुछ कहकर और मुझे सांत्वना देकर चले गए। उसके बाद मुझे नींद आ गई और मैं सो गया। मेरी नींद कब खुली, कह नहीं सकता, पर दर्द में कमी हो चली थी और दूसरे दिन प्रातः काल पीड़ा रफूचक्कर हो गई थी। कोई दो सप्ताह मुझे पूरा स्वस्थ होने में लगे।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্ৰ শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca | Foundation

बराबर डाक्टर चूहानाथ कातरजी की दवा पीता रहा। अठारह आने की शीशी प्रतिदिन आती रही। दवा के स्वाद का क्या कहना। शायद मुर्दे के मुख में डाल दी जाए तो तिलमिला उठे। पंद्रह दिन के बाद मैं डाक्टर साहब के घर गया उन्हें धन्यवाद देने के लिए। मैंने पूछा कि अब तो दवा पीने की कोई आवश्यकता न होगी। वे बोले, "यह तो आपकी इच्छा पर है। पर यदि आप काफी एहतियात न करेंगे तो आपको 'अपेंडिसाइटीज' हो जाएगा।

एहतियात – সাৱধানতা
अपेंडिसाइटीज – এপেন্ডিচাইটিছ
(এক বেমাৰ)

आपकी श्रीमतीजी बड़ी भाग्यवती हैं। अगर छह घंटे की देर और हो जाती तो उन्हें जिंदगी भर रोना पड़ता। वह तो कहिए कि आपने मुझे बुला लिया। अभी कुछ दिनों दवा पीजिए।"

इसी बीच में डाक्टर महोदय ने ऐसे-ऐसे मर्जी के नाम सुनाए कि मेरी तबीयत फड़क उठी। भला मुझे ऐसे मर्ज हुए, जिनका नाम साधारण क्या बड़े पढ़े-लिखे लोग भी नहीं जानते। मालूम नहीं, ये मर्ज सब डाक्टरों को मालूम हैं कि केवल हमारे कातरजी को ही मालूम हैं।

मर्ज - ৰোগ

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

खैर, मैंने दवा जारी रखी। अभी एक सप्ताह भी पूरा न हुआ था कि दो बजे दिन को एकाएक सिर दर्द रूपी फौज ने मेरे शरीर रूपी किले पर हमला कर दिया। डाक्टर साहब ने जिन-

जिन भयंकर मर्जी का नाम लिया था, उनका स्वरूप मेरी रोती हुई आँखों के सामने नृत्य करने लगा। मैं सोचने लगा कि हुआ हमला उन्हीं में से किसी एक मर्ज का। तुरंत डाक्टर साहब के यहाँ आदमी दौड़ाया गया कि इंजेक्शन का सामान लेकर चलिए।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

वहाँ से आदमी बिना माँगी पत्रिका की भाँति लौटकर आया कि डाक्टर साहब कहीं गए हैं। इधर मेरी हालत क्या थी, उसका वर्णन यदि सरस्वती शार्टहैण्ड से भी लिखें तो संभवतः समाप्त न हो। हवाई जहाज के पंखे की तेजी के समान तो करवटें बदल रहा था, इधर मित्रों और घरवालों की कांफ्रेंस हो रही थी

कि अब कौन बुलाया जाए, पर निःशस्त्रीकरण सम्मेलन की भाँति कोई न किसी की बात मानता था, न कोई निश्चय ही हो पाता था।

निःशस्त्रीकरण - अस्त्र विसर्जन

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मालूम नहीं, लोगों में क्या-क्या बहसें हुईं, कौन-कौन प्रस्ताव फेल हुए, कौन-कौन पास। अंत में हमारे मकान के बगल में रहने वाले पंडितजी की विजय हुई और आयुर्वेदाचार्य, रसज्ञरंजन, चिकित्सा-मार्तंड, कविराज पंडित सुखदेव शास्त्री को बुलाने की बात तय हुई। एक सज्जन उन्हें बुलाने के लिए भेजे गए। कोई पैंतालीस मिनट बीत गए, परंतु न वैद्यजी आए, न भेजे गए सज्जन का ही पता चला। एक ओर दर्द आयकर की तरह बढ़ता जा रहा था, दूसरी ओर इन लोगों का भी पता नहीं।

और भी बेचैनी बढ़ी, अन्त में जो साहब गए थे, लौटे। वे बोले, "वैद्यजी ने बड़े गौर से पत्रा देखा और कहा कि अभी बुध के संक्रांति वृत्त में शनि की स्थिरता है, इकतीस पल नौ विपल में शनि बाहर हो जाएगा और डेढ़ घटी एकादशी का योग है। उसके समाप्त होने पर मैं चलूँगा। सुनकर मेरा कलेजा कबाब हो गया। मगर वे कह आए थे, अतएव बुलाना भी आवश्यक था। मैंने फिर उन्हें भेजा। कोई आधे घंटे बाद वैद्यजी एक पालकी पर तशरीफ लाए। आकर आप मेरे सामने कुर्सी पर बैठ गए।

मूल्यांकन



1 दवा के स्वाद के बारे में लेखक ने क्या टिप्पणी की?

क बहुत मीठी थी

ख स्वादहीन थी

ग इतनी खराब थी कि मुर्दा भी चौंक उठे।

मूल्यांकन



2 | डॉक्टर के अनुसार अगर सावधानी नहीं बरती जाए तो कौन-सा रोग हो सकता है?

क अपेंडिसाइटीस

ख मलेरिया

ग पीलिया